एम॰ ए॰ (हिन्दी) II सेमेस्टर

डॉ॰ अनिरुद्ध प्रसाद
महाराजा कॉलेज
आरा॰

हिन्दी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल)

पंचम पत्र

प्रश्न: 'भारतेन्दु युग' हिन्दी साहित्य का संक्रमण-काल कहा जाता है। इस उक्ति की समीक्षा कीजिए।

उत्तर: जिस समय भारतेन्दु हुए उस समय हिंदी साहित्य की बड़ी बुरी स्थिति थी। रीतिकाल की प्रवृत्तियाँ काव्य के क्षेत्र में व्याप्त थीं। अब तक ब्रिटिश साम्राज्य भारत में अपनी जड़ जमा चुका था। अँग्रेजी शासन में भारत की आत्मा बुरी तरह कराह रही थी। चारों ओर अनैतिकता एवं अत्याचार का बोलबाला था। ऐसी अवस्था में भारतीय जनता अँग्रेजों के चंगुल से निकलने के लिए छटपटा रही थी। क्योंकि भारतीयों ने अपनी आत्मा से इस विदेशी शासन को कभी भी स्वीकार नहीं किया था। इसी बीच सन् 1885 ई० में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुयी। कांग्रेस पार्टी के माध्यम से पूरे देश में अँग्रेजी शासन के विरुद्ध आंदोलन होने लगे। बाल गंगाधर तिलक ने सन् 1905 ई० में 'स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार' का नारा दिया। उसी समय कांग्रेस में विभाजन हो गया है। अँग्रेजों की नीति 'फूट डालो और राज करो' की थी। जिसके कारण कांग्रेस में भी एक नरम दल और दूसरा गरम दल का विभाजन हुआ। यह भारतीयों में फूट डालने की कोशिश थी। किंतु एक स्तर पर देश को लाभ भी हुआ। अँग्रेजी के प्रचार-प्रसार के कारण भारत में राजनैतिक, सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ। यूरोपीय सभ्यता का संबंध पाकर भारतेन्दु युग के जीवन में एक हलचल पैदा हुयी। जिसने बौद्धिक क्षेत्र में एक नयी चेतना को जन्म दिया। यह नई चेतना थी स्वतंत्रता की विचारधारा। परिणाम स्वरूप साहित्य में भी गत मान्यताओं एवं की उपेक्षा शुरू हो गयी। देश और साहित्य ने एक नए युग में प्रवेश किया। इसी कारण हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में

P.T.O

एक नए वैचारिकी ने जन्म लिया जिसे 'नव जागरण' कहा जा सकता है। जिसके कारण सामाजिक मान्यताएँ बदलने लगीं और राष्ट्रीय पृष्ठभूमि एक नए कलेवर प्राप्त करने की संभावनाएँ विकसित होने लगीं।

भारतेन्दु युग का साहित्य पुरातन एवं नवीनता का संगम स्थल है। यहाँ एक तरफ पुरानी परंपराओं का मोह दिखलायी पड़ता है, दूसरी तरफ नवीनता का आग्रह है, जो हमारे साहित्य को आगे बढ़ने की ओर प्रेरित करता है। इस युग के प्रतिनिधि साहित्यकार भारतेन्दु ने अपनी रचनाओं में पुरानी परंपराओं को देखते हुए वीर एवं श्रृंगार रस की शैली अपनायी और सूफी काव्य के प्रेमिल अनुभूतियों को स्वीकार किया। उन्होंने राम काव्य की प्रबंधात्मकता, पौरुष एवं मर्यादा का भी चित्रण किया। किंतु उनकी स्वतंत्र अनुभूत चेतना ने पारंपरिक पद्धतियों को त्याग कर एक नवीन शैली का भी प्रादुर्भाव किया। उन्होंने ज्ञान, नीति एवं आधुनिक समस्याओं को लेकर एक नवीन साहित्य की सृष्टि की। भारतेन्दु का जन्म चूँकि 1857 ई० के क्रांति से सात वर्ष पूर्व हुआ था। इसलिए उनकी प्रारंभिक रचनाओं में राजभक्ति के दर्शन मिलते हैं। लेकिन आगे चलकर उनके लेखन में वह परिपक्वता आई की अंग्रेजी शासन की चूलें हिल गईं। कुछ आलोचक भारतेन्दु के प्रारंभिक रचनाओं के आधार पर उन्हें अंग्रेजों के पक्षधर बताते हैं। किंतु परिस्थिति ऐसी थी कि भारतेन्दु खुद को ऐसी स्थिति से नहीं बचा सके। फिर भी भारतेन्दु के प्रौढ़ रचनाओं पर जहाँ ध्यान जाता है वहाँ भारतेन्दु की प्रखरता एवं राष्ट्रभक्ति पर कोई संदेह नहीं किया जा सकता है। भारतेन्दु ने खुद को न केवल श्रृंगार काल के कूपमंडूकता से बाहर निकाला बल्कि सामाजिक क्षेत्र में उन्होंने क्रांति के अलख जगाने का काम किया। उन्होंने सामाजिकता के पक्ष में शोषित-पीड़ित जनता के लिए आवाज उठाई।

P.T.O

भारतेन्दु का युग इसी संधि स्थल पर खड़ा है। जहाँ प्राचीनता से नवीनता का मेल हो रहा था। साहित्य के क्षेत्र में इस युग का योगदान बड़ा भारी है। इस युग का साहित्य अपने पूर्ववर्ती युग से विषय और शैली दोनों रूपों में भिन्न था। अब साहित्य महलों से निकलकर गाँव और झोपड़ियों का चक्कर लगाने लगा था। नूतनता एवं प्राचीनता के आग्रह ने परिवेश को पूरी तरह से बदलकर रख दिया था। इस युग के लेखकों ने श्रृंगार काल की स्थापनाओं का बहिष्कार किया और अपनी रचनाओं में स्वदेशी होने का पक्ष रखा। भाषा के क्षेत्र में ब्रजभाषा की जगह खड़ी बोली हिन्दी को प्रश्रय मिला। इन्होंने एक तरफ सूफियों के प्रेम-तत्व को ग्रहण किया दूसरी तरफ कबीर के अक्खड़पन को अपनाया। जिस प्रकार कबीर ने सामाजिक क्षेत्र में रूढ़ियों एवं रीति-रिवाजों का प्रतिकार किया था, यहाँ भी समाज में फैले रूढ़ियों पर प्रहार की नीति स्पष्ट दिखलायी पड़ती है। समाज में बाल विवाह, सती प्रथा, स्त्री शिक्षा का निषेध एवं विधवा विवाह जैसी समस्यायें चरम पर थीं। ऐसी स्थिति में भारतेन्दु युग के रचनाकारों ने इन समस्यों के प्रति लोगों को जागरूक करने का काम किया। भारतेन्दु द्वारा लिखा नाटक 'अंधेर नगरी' एवं 'वैदिकी हिंसा, हिंसा न भवति' इसके उदाहरण हैं। बालमुकुन्द गुप्त, प्रताप नारायण मिश्र आदि लेखकों ने अंग्रेजों के शोषण परक-नीति पर प्रहार किया। बालमुकुन्द गुप्त के निबंध 'शिव शंभु का चिट्ठा' इस दृष्टि से देखा जा सकता है। अंग्रेजों के आर्थिक शोषण को देखकर भारतेन्दु लिखा — "धन विदेश चलि जात है ये अति ख्वारी।" आगे उन्होंने लिखा —

भीतर-भीतर सब रस चूसै, बाहर से तन-मन-धन मूसै।
जाहिर बातन में अति तेज, क्या सखि साजन नहीं अंग्रेज।

भारतेन्दु कालीन कविता में एक ओर देश-प्रेम और राष्ट्रीयता की भावना दिखलायी पड़ती है, वहीं भाव, भाषा और छंद की दृष्टि से उसमें पुरातनता का समावेश दिखलायी पड़ता है। प्राचीन काल के भक्त कवियों की तरह यहाँ भी भक्ति के काव्य लिखे गए हैं, जिसमें ईश्वर की लीलाओं का वर्णन हुआ है। कहने का मतलब यह कि यहाँ प्राचीनता एवं नवीनता का सामंजस्य दिखलाई पड़ता है। भारतेन्दु युग का साहित्य ब्रजभाषा साहित्य का अंतिम पुष्प है तो आधुनिक युग के प्रथम चरण। इस युग की रचनाओं में जो प्रखरता दिखलाई पड़ती है उतनी उनके परवर्ती साहित्य में नहीं।

Scanned with CamScanner